बेहद का वैराग्य - 13

अव्यक्त बापदादा :- (03. 04. 1996)

➳ _ ➳ बेहद में सकाश दो। कई बच्चे अपने से भी पूछते हैं और आपस में भी पूछते हैं कि बेहद का वैराग्य कैसे आयेगा? दिखाई तो देता नहीं है, लेकिन **बेहद की सेवा में अपने को बिजी रखो तो बेहद का वैराग्य स्वतः ही आयेगा क्योंकि यह सकाश देने की सेवा निरन्तर कर सकते हो**, इसमें तबियत की बात, समय की बात - यह सहज हो जाती है। दिन रात इस बेहद की सेवा में लग सकते हो।

➳ _ ➳ **जैसे ब्रह्मा बाप को देखा रात को भी कैसे आंख खुली और बेहद की सकाश देने की सेवा होती रही। तो यह बेहद की सेवा इतना बिजी कर देगी जो बेहद का वैराग्य स्वतः ही दिल से आयेगा।** प्रोग्राम से नहीं। यह करें, यह करें - यह प्लैन तो बनाते हो, लेकिन बिजी बेहद की सेवा में रहना - यह सबसे सहज साधन है क्योंकि **जब बेहद को सकाश देंगे तो नजदीक वाले तो ऑटोमेटिक सकाश लेते रहेंगे। इस बेहद की सकाश देने से वायुमण्डल ऑटोमेटिक बनेगा।**

➢➢ बेहद की वैराग्यवृति

➳ _ ➳ सम्पूर्ण बनने की मंजिल तो ये है ही है

➳ _ ➳ **जब तक बेहद का वैराग्य न आए तब तक मंजिल के नजदीक नही पहुँच सकते**

➳ _ ➳ **बेहद की सेवा माना सकाश देने की सेवा**

➳ _ ➳ सकाश देने की सेवा भी कौन कर सकता है ??

→ **क्योंकि ये बहुत ऊंची सेवा है सकाश की सेवा करने के लिए जमा का खाता भी चाहिए और व्यर्थ भी खत्म हो जाए**

- क्योंकि सकाश देते देते एक संकल्प भी आया तो नीचे उतर जायेंगे

➳ _ ➳ बेहद का वैराग

→ **बेहद की सेवा में अपने को बिजी रखो**

→ इधर उधर नही देखो तो बेहद का वैराग्य स्वतः ही आ जायेगा

→ दिन-रात इस सेवा मे लग सकते हो

➳ _ ➳ **जैसे ब्रह्मा बाबा मे शिव बाबा ने प्रवेश किया और बाबा का आदेश अंदर से हुआ तो सब छोड दिया तन मन धन से ब्रह्मा बाबा ने**

➳ _ ➳ **एकदम सब छोड दिया और एकदम वैराग्यवृति आ गई**

→ जो भी पार्टनर से मिला सब यज्ञ मे लगा दिया

- कभी कोई संकल्प भी नही आया

→ जो ट्रस्ट बना बाबा ने उसमे भी बडी बडी बहनों का नाम दिया और बहनों को समर्पण कर दिया

→ जो बहनें इतना पढी हुई भी नही थी तो भी बहनों का नाम ट्रस्ट को दे दिया

→ **उस रीति ट्रस्टी बन सब समर्पित कर दिया यज्ञ मे**

→ **उनके आगे तो कोई भी सैम्पल नही था हमारे आगे तो कितने सैम्पल है**

➳ _ ➳ सब दादियो की त्याग तपस्या वैराग्य भावना कितनी थी !!

→ एक दूसरे के प्रति इतना रिस्पेक्ट था मान सम्मान था जैसे माला के मनके होते है

■ हमारी स्थिति भी ऐसी हो

➳ _ ➳ भला कितना भी त्याग किया हो अगर अंदर मे कोई इच्छा रह जाती है

→ तो अंदर से बहुत संकल्प चलता है

➳ _ ➳ अगर छोटी छोटी बातो से अभ्यास कर ले तो बडी वैराग्यवृति हो सकती है

अव्यक्त बापदादा :- (28.11.1997)

➳ _ ➳ **अभी समय प्रमाण सबको बेहद के वैराग्य वृत्ति में जाना ही होगा।** लेकिन बापदादा समझते हैं कि बच्चों का समय शिक्षक नहीं बनें, जब बाप शिक्षक है तो समय पर बनना - यह समय को शिक्षक बनाना है। उसमें मार्क्स कम हो जाती हैं। अभी भी कई बच्चे कहते हैं - समय सिखा देगा, समय बदला देगा। समय के अनुसार तो सारे विश्व की आत्मायें बदलेंगी लेकिन आप बच्चे समय का इन्तजार नहीं करो। **समय को शिक्षक नहीं बनाओ। आप विश्व के शिक्षक के मास्टर विश्व शिक्षक हो, रचता हो, समय रचना है तो हे रचता आत्मायें रचना को शिक्षक नहीं बनाओ।**

➳ _ ➳ **ब्रह्मा बाप ने समय को शिक्षक नहीं बनाया, बेहद का वैराग्य आदि से अन्त तक रहा।** आदि में देखा इतना तन लगाया, मन लगाया, धन लगाया, लेकिन जरा भी लगाव नहीं रहा। तन के लिए सदा नेचुरल बोल यही रहा - बाबा का रथ है। मेरा शरीर है, नहीं। बाबा का रथ है। बाबा के रथ को खिलाता हूँ, मैं खाता हूँ, नहीं। तन से भी बेहद का वैराग्य। मन तो मनमनाभव था ही। धन भी लगाया, लेकिन कभी यह संकल्प भी नहीं आया कि मेरा धन लग रहा है। कभी वर्णन नहीं किया कि मेरा धन लग रहा है या मैंने धन लगाया है। बाबा का भण्डारा है, भोलेनाथ का भण्डारा है। धन को मेरा समझकर पर्सनल अपने प्रति एक रूपये की चीज़ भी यूज नहीं की। कन्याओं, माताओं की जिम्मेवारी है, कन्याओं-माताओं को विल किया, मेरापन नहीं।

➳ _ ➳ **समय, श्वांस अपने प्रति नहीं, उससे भी बेहद के वैरागी रहे।** इतना सब कुछ प्रकृति दासी होते हुए भी कोई एकस्ट्रा साधन यूज़ नहीं किया। सदा साधारण लाइफ में रहे। कोई स्पेशल चीज़ अपने कार्य में नहीं लगाई। वस्त्र तक, एक ही प्रकार के वस्त्र अन्त तक रहे। चेंज नहीं किया। बच्चों के लिए मकान बनाये लेकिन स्वयं यूज़ नहीं किया, बच्चों के कहने पर भी सुनते हुए

उपराम रहे। सदा बच्चों का स्नेह देखते हुए भी यही शब्द रहे - सब बच्चों के लिए है। तो इसको कहा जाता है बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रत्यक्ष जीवन में रही।

➳ _ ➳ अन्त में देखो बच्चे सामने हैं, हाथ पकड़ा हुआ है लेकिन लगाव रहा? बेहद की वैराग्य वृत्ति। स्नेही बच्चे, अनन्य बच्चे सामने होते हुए फिर भी बेहद का वैराग्य रहा। सेकण्ड में उपराम वृत्ति का, बेहद के वैराग्य का सबूत देखा। **एक ही लगन सेवा, सेवा और सेवा.... और सभी बातों से उपराम। इसको कहा जाता है बेहद का वैराग्य।** अभी समय प्रमाण बेहद के वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। **बिना बेहद के वैराग्य वृत्ति के सकाश की सेवा हो नहीं सकती। फालो फादर करो।**

➳ _ ➳ साकार में ब्रह्मा बाप रहा, निराकार की तो बात छोड़ो। साकार में सर्व प्राप्ति का साधन होते हुए, सर्व बच्चों की जिम्मेवारी होते हुए, सरकमस्टांश, समस्यायें आते हुए पास हो गये ना! पास विद ऑनर का सर्टीफिकेट ले लिया। विशेष कारण बेहद की वैराग्य वृत्ति। अभी सूक्ष्म सोने की जंजीर के लगाव, बहुत महीन सूक्ष्म लगाव बहुत हैं। कई बच्चे तो लगाव को समझते भी नहीं हैं कि यह लगाव है। समझते हैं - यह तो होता ही है, यह तो चलता ही है। मुक्त होना है, नहीं। लेकिन ऐसे तो चलता ही है। अनेक प्रकार के लगाव बेहद के वैरागी बनने नहीं देते हैं। चाहना है बनें, संकल्प भी करते हैं - बनना ही है। लेकिन चाहना और करना दोनों का बैलेन्स नहीं है।

➳ _ ➳ चाहना ज्यादा है, करना कम है। करना ही है - यह वैराग्य वृत्ति अभी इमर्ज नहीं है। बीच-बीच में इमर्ज होती है, फिर मर्ज हो जाती है। समय तो करेगा ही लेकिन पास विद ऑनर नहीं बन सकते। पास होंगे लेकिन पास विद ऑनर नहीं। समय की रफ्तार तेज है, पुरुषार्थ की रफ्तार कम है। मोटा-मोटा पुरुषार्थ तो है लेकिन सूक्ष्म लगाव में बंध जाते हैं। **अभी समय प्रमाण लगाव-मुक्त बेहद के वैरागी बनो। मन से वैराग्य हो।** प्रोग्राम प्रमाण वैराग्य जो आता है वह अल्पकाल का होता है। **चेक करो - अपने सूक्ष्म लगाव को।** मोटी-मोटी बातें अभी खत्म हुई हैं?

➢➢ वैराग्य

➳ _ ➳ **साधन है ही नही तो वो त्याग नही है वैराग्य भी नही है**

➳ _ ➳ साधन बहुत है और उसे यूज न करो दूसरे को दो तो वो वैराग्य है

→ अगर कोई व्यक्ति देता है और हम उसे स्वीकार कर लेते है अंदर से इच्छा तो होती है

- **तो प्रकृति के मालिक नही बने दासी बन गए**

➳ _ ➳ वैराग्य अंदर का जो होता है वो अलग प्रकार का होता है

→ जैसे जो तपस्या करने वाले शुरूआत मे निकले थे राजाये उनके जीवन मे तकलीफे होती है फिर वैराग्य की तरफ जाते है तो घर-बार छोड देते है

- फिर घरवाले याद आते है

→ या धोखा हो जाता था तो वैराग्य आ जाता था कि अब तो हम जायेगे फिर थोडे टाइम बाद वैराग्य खत्म हो जायेगा तो

- फिर सबका प्यार हो जायेगा

→ सारे के सारे घर को तो छोडकर तो आते है पर सोने की जंजीर बहुत अच्छी लगती है

→ सूक्ष्म सूक्ष्म जंजीर होती है उसमे छूट नही सकते है

➳ _ ➳ **जब तक हमारी इच्छायें होती है थोडे थोडे झुकाव लगाव मे रहते है तब तक हम वैरागी नही बन सकते**

→ जो धर्म संस्थापक आते है उनकी आंखे कैसी होती है ??

→ दुनिया मे नही देखते

→ न खुली होती है न बंद होती है

- बस अंदर से एक ही बाबा दिखाई देता है यानि एक भगवान के कार्य के लिए आए है

→ कुछ भी बुद्धि मे नही आता तभी तो इतना महान बने

→ कितना सहन किया बस उसको अपनी आंखो रखा

➳ _ ➳ **हमे तो इतना बडा बाबा मिला है हमारा जीवन बना रहा है**

➳ _ ➳ **बाबा इतना सिम्पल है**

→ **ये उसकी झोपड़ी है यहां रहते थे**

→ ये उसकी गाथायें है

→ **जो बाबा ने त्याग किया ये उसकी कहानियां है**

➳ _ ➳ अनेक प्रकार की इच्छायें, मान शान की इच्छायें, अंदर की इच्छायें हमे ऊपर उठने ही नही देती

→ सकाश देने बैठे कोई व्यक्ति दिखा तो मन हिलने लग गया

→ वो स्थिति हमे उठने नही देती

- उसके लिए बहुत पुरुषार्थ चाहिए

➳ _ ➳ चाहना ज्यादा है, करना कम है

→ चाहते तो बहुत है सम्पूर्ण बन जायेगे जल्दी से होमवर्क कर लेंगे

➳ _ ➳ चाहना और करना दोनों का बैलेन्स हो